No. of Printed Pages : 4

एम.एच.डी.-4

03174

हिन्दी में स्नातकोत्तर उपाधि (एम.एच.डी.)

सत्रांत परीक्षा

दिसंबर, 2011

एम.एच.डी.-4 : नाटक एवं अन्य गद्य विधाएँ

समय : 3 घण्टे *अधिकतम अंक : 100*

नोट : *पहला प्रश्न **अनिवार्य** है। शेष **किन्हीं चार** प्रश्नों के उत्तर दीजिए।*

---

1. ***किन्हीं तीन*** को सदर्भ सहित व्याख्या कीजिए। **3x12=36**

(क) ऐसा जीवन तो विड़म्बना है, जिसके लिए रात-दिन लड़ना पड़े। आकाश में जब शीतल शुभ्र शरद-शशि का विलास हो, तब भी दाँत-पर-दाँत रखे मुट्ठियों को बाँधे-लाल आँखों से एक-दूसरे को घूरा करें! बसंत के मनोहर प्रभात में, निभृत कगारों में चुपचाप बहने वाली सरिताओं का स्रोत गरम रक्त बहा कर लाल कर दिया जाय! नहीं-नहीं चक्र! मेरी समझ में मानव जीवन का यही उद्देश्य नहीं है। कोई और भी निगूढ़ रहस्य है चाहे मैं उसे न जान सका हूँ।

(ख) मैं ने कहा था, यह नाटक भी मेरी तरह अनिश्चित है। उसका कारण भी यही है कि मैं इसमें हूँ और मेरे होने से ही सब कुछ इसमें निर्धारित या अनिर्धारित है। एक विशेष परिवार उसकी विशेष परिस्थितियाँ! परिवार दूसरा होन से परिस्थितियाँ बदल जातीं, मैं वही रहता। इसी तरह सब कुछ निर्धारित करता। इस परिवार की स्त्री के स्थान पर कोई दूसरी स्त्री किसी दूसरी तरह से मुझको झेलती या वह स्त्री मेरी भूमिका ले लेती और मैं उसकी भूमिका लेकर उसे झेलता। नाटक अंत तक फिर भी इतना ही कठिन होता कि इसमें मुख्य भूमिका किसकी थी-मेरी, उस स्त्री की, परिस्थीतियों की, या तीनों के बीच से उठते कुछ सवालों की।

(ग) सारे तुम्हारे कर्मों का पाप-पुण्य योगक्षेम मैं वहन करूंगा
अपने कंधो पर अट्ठारह दिन के इस भीषण संग्राम में
कोई नहीं केवल मैं ही मरा हूँ करोड़ों बार जितनी बार जो
भी सैनिक भूमिशायी हुआ
कोई नहीं था
वह मैं ही था
गिरता था घायल होकर जो रणभूमि में। अश्वत्थामा के
अंगों से
रक्त, पीप, स्वेद बन कर बहूँगा
मैं ही युग-युगांतर तक
जीवन हूँ मैं
तो मृत्यु भी तो मैं ही हूँ माँ!
शाप यह तुम्हारा स्वीकार हैं।

(घ) प्रेम का प्रभाव एकांत भी होता है और लोक जीवन के नाना क्षेत्रों में भी दिखाई पड़ता है। एकांत प्रभाव उस अंतर्मुख प्रेम में देखा जाता है जो प्रेमी को लोक के कर्मक्षेत्र से खींच कर केवल दो प्राणियों के एक छोटे से संसार में बंद कर देता है। उसका उठना-बैठना, चलना-फिरना, मरना-जीना सब उसी घेरे के भीतर होता है। वह उस घेरे के बाहर कोई प्रभाव उत्पन्न करने के उदेश्य से कुछ भी नहीं करता उसमें जो साहस, धीरता, कष्ट-सहिष्णुता आदि दिखाई देती है वह प्रेम मार्ग के बीच प्रेमोन्माद के रूप में, लोक के बीच कर्तव्य के रूप में नहीं।

(ङ) अब भी 'राम की शक्तिपूजा' अथवा निराला के अनेक गीत बार-बार पढ़ता हूँ, लेकिन तुलसीदास जब-जब पढ़ने बैठता हूँ तो इतना ही नहीं कि एक नया संसार मेरे सामने खुलता है, उससे भी विलक्षण बात यह है कि वह संसार मानो एक ऐतिहासिक अनुक्रम में घटित होता हुआ दीखता है। मैं मानो संसार का एक स्थिर चित्र नहीं बल्कि एक जीवंत चित्र देख रहा होता हूँ। ऐसी रचनाएँ तो कई होती हैं जिनमें एक रसिक हृदय बोलता है। बिरली ही रचना ऐसी होती है जिसमें एक सांस्कृतिक चेतना सर्जनात्मक रूप में अवतरित हुई हो। 'तुलसीदास' मेरी समझ में ऐसी ही एक रचना है।

2. 'अंधेर नगरी' नाटक में व्यक्त व्यंग्य और विड़म्बना को निरूपित करते हुए आज के जमाने में उसका महत्व स्थापित कीजिए। 16

3. रंगमंच और अभिनेयता की दृष्टि से स्कंदगुप्त नाटक की समीक्षा कीजिए। 16

4. 'आधे अधूरे' की नाट्यगत विशेषताओं पर प्रकाश डालिए। 16

5. 'अंधायुग' मिथकीय आख्यान को आधुनिक जीवन संदर्भों में किस रूप में और किस सीमा तक अभिव्यक्त करने में सफल हुआ है? सोदाहरण उत्तर दीजिए। 16

6. नुक्कड़ नाटक की विशेषताओं को ध्यान में रखते हुए 'औरत' की समीक्षा कीजिए। 16

7. ललित निबंध के रूप में 'कुटज' का मूल्यांकन कीजिए। 16

8. ''कलम का सिपाही' में व्यक्ति और युग का अनुठा संयोजन हुआ है।' इस कथन से आप कहाँ तक सहमत हैं- अपना मत व्यक्त कीजिए। 16

9. यात्रा वृत्तांत की विशिष्टताएँ बताते हुए इस साहित्य विधा में राहुल जी के योगदान पर प्रकाश डालिए। 16

10. ***किन्हीं दो*** पर टिप्पणी लिखिए : 16

(क) प्रताप नारायण मिश्र

(ख) रिपोर्ताज

(ग) राम चंद्र शुक्ल

(घ) ऑक्टोवियो पॉज